International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दसमहाशक्तियो के महत्व का तन्त्रमहायोग में वर्णन

डॉ.अर्चना शर्मा, अतिथि विद्वान योग, म.गा.चि.ग्रा.वि.वि. चित्रकूट सतना म.प्र.

डॉ. बृजेश सिंह, सहायक आचार्य अष्टांगयोग, ल.वि.वि. अहमदाबाद

रितु रानी, शोध छात्रा योग, श्री रावतपुरा सरकार वि.वि.रायपुर

प्रस्तावना– तन्त्रयोग में आगम और निगम के समन्वय में सोहम् भाव से हंसोपासना की चर्चा की गई है। यह शैव व शाक्त एवं वेदान्त मत में समान रूप से मान्य है। महा निर्वाण तन्त्र में कथन है कि– 'ब्रह्म सत्वरूप एवं सर्वव्यापी हैं।' जिसमें पूरा संसार आवृत होकर, उसका एक अद्वैत चिन्मात्र स्वरूप कार्य रूप जगत मं निर्लिप्त है। वस्तुतः उनकी इच्छा मात्र अवलम्बन के द्वारा पराशक्ति ही चराचर जगत को उत्पन्न, पालन एवं संहार करती है। महाप्रलय के समय जग संहारक महाकाल भी शक्ति का ही रूप है, जिसे काल को भी शक्ति आत्मसात कर लेती है। जिसको आद्यकाली कहा जाता है। प्रलय के समय निराकार तमोमय स्वरूप में यह शक्ति ब्रह्म के अन्तःकरण में लीन होकर बह्म से सर्वथा अभिन्न अर्थात् एक रूप हो जाती है। अतएव ब्रह्म एवं शक्ति साधना का लक्ष्य एक है। मूल प्रकृति सहित तुरीयावस्था हो ब्रह्म का स्वरूप है। अतः ब्रह्म से तात्पर्य है– मूल प्रकृति सहित ब्रह्म व शक्ति है– ब्रह्म से संलिप्ट मूल प्रकृति अर्थात् परा शक्ति, जिसे उपासना, माया, महामाया, काली, महाकाली, भैरवी आदि नामों से जानते है, ब्रह्म एवं ब्रह्म की शक्ति दो पृथक तत्व नही है। यदि ब्रह्म को कर्तृव्य से पृथक कर दिया जाय, तब वह केवल जड़ मात्र रह जाता है– 'त्वां विना जड्यमान सः।'

यदि शक्ति को कल्पना ब्रह्म से पृथक की जाय तब शक्ति सत्ता हीन शेष रह जाती है। अतः यह रहस्य सम्प्रदाय का यह निश्चित सिद्धान्त व परम तत्व शिव शक्ति का संलिप्ट रूप है–

'न क्रिया रहितं ज्ञानं न ज्ञान रहिता क्रिया'।

इसप्रकार ब्रह्म की उपासना से तात्पर्य शक्ति से संलिप्त ब्रह्म की उपासना एवं शक्ति उपासना का मुख्य ध्येय है। बह्म एवं शक्ति दोनो की उपासना से एक ही फल की प्राप्ति होती है। महानिर्वाण तन्त्र में कथन है कि– अतः ते कथितं भद्रे ब्रह्म मन्त्रेण दीक्षितः।

यत् फलं समवाप्नोति तत्फलं तब साधनात्।।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शक्ति तन्त्र में दश महाविद्याओं के विषय में विस्तृत चर्चा मिलती है। जिसके चार खण्ड प्रकाशित हुए है। काली, तारा, षोड्शी एवं भुवेनश्वरी शाक्त प्रमोद में भी बगला महाविद्या का उल्लेख मिलता है। सौभाग्य भास्कर पुस्तक में लिखा है कि –

कालीतारा षोड्शी व बगला भुवनश्वरी ।
धूमा छिन्ना च मातंगी भैरवी कमलात्मिका।।

दश महाविद्या– शाक्त तन्त्र मं एक ही पराशक्ति के दस स्वरूप उपासना क्रम में बतलाये गये हैं। मौलिक रूप से पराशक्ति का मूल रूप एक ही है, किन्तु प्रकट रूप में उसके दस भेद है, मूल में एकत्व होने के कारण सभी महाविद्यायें ब्रह्मविद्या मानी जाती है। इन महाविद्याओं के उपासना की विशेषता यह है कि इनसे श्रेय और प्रेय दोनों को उपलब्धि होती है। अरूप पराशक्ति का जो रूप चित्रित किया गया है उसमें गुणों से परे होने तथा व्यापक एवं निराकार होने के चिन्ह प्रतीक रूप में उपस्थित है उसके अतिरिक्त श्रेय एवं प्रेय से सम्बन्धित चिन्ह भी संयुक्त रुप से वर्णित है–

1. काली– यह आद्य महाविद्या, काल की भी नियामिका तथा बह्म स्वरूपा मानी गई है। काली के स्वरूप में बताया गया है कि वह शमशान में निवास करती है। मेघ के समान उनका रंग सांवला है वह मुक्त केशी एवं दिगम्बरा है मुण्डमाला इनके गले में सुशोभित है। उनकी चार भुजाएं है– जिनमें बायी तरफ की ऊपर की भुजा में खड्ग व नीचे की भुजा में सद्यः छिन्न शिर है तथा दाहिनी तरफ उपर की भुजा में अभयमुद्रा तथा नीचे की भुजा में वरमुद्रा है। शवरूपी शिव पर वह अवस्थित है जिह्वा निकली हुई और मुख से रक्त की धारा प्रवाहित हैं, यह सभी रूप प्रतीक है। मुण्ड माला वर्ण को प्रतीक हैं खड्ग से अज्ञान का नाश करती हैं, सद्यः छिन्न सिर से मोह का विलय है। शमशानालयवासिनी कहने का तात्पर्य जगत प्रपंच से उपर का अधिष्ठान तथा इनका बीज 'क्रीं' है। इनके मन्त्र संख्या अनेक है। दक्षिण काली, शमशान काली भद्रकाली आदि इनके अनेक भेद दक्षिण काली की उपासना अधिक प्रचलित है।

2. तारा– अनेक योनियों मे अज्ञानवश घूमते हुए जीवों का अनेक क्लेशों से अनवरत सन्तप्त देखकर परम करूणामयी जगन्माता श्री तारा रूप से, जीवो को भव सिन्धु से तारती है। अतः तारा देवी तारक स्वरुप है।

3. विद्या– श्री विद्या को ब्रह्म विद्या भी कहते हैं। यह भारतीय तन्त्र साधना की सर्वोपरि विद्या है। उर्ध्वाम्नाय से उपासित सभी विद्याएं श्री विद्या के नाम से ही अभिहित हैं। ब्रह्माण्ड पुराण के ललितो–पारव्यान में कथन है कि–

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इतिमन्त्रष, बहुधा, विद्याया महिमोच्यते।

मोक्षैकहेतु विद्या तु,श्री विद्या नात्र संशयः।

श्री विद्या के उपासक को साक्षात शिव माना गया है। श्री विद्या के अनेक नाम है– ललिता, राजराजेश्वरी, महात्रिपुर सुन्दरी, षोड्शी आदि दस महा विद्यायों में तृतीय षोड्शी विद्या ही श्री विद्या से श्रीत्रिपुर सुन्दरी का मन्त्र और उसके देवता का बोध होता है।

4. भुवनेश्वरी– ब्रह्म विद्या प्रदायिनी चौथी विद्या भुवेनश्वरी है। इस विद्या की उपासना स भोग और मोक्ष दोनां की ही प्राप्ति होती है। काव्य शक्ति भी उपलब्ध होती हैं इनका एकाक्षर बीज 'हीं' हैं। भुवनेश्वरी उदित होते हुए चन्द्रमा की प्रभा से मुक्त किरीट धारण किये हुए है। इनके स्तन तुंग तथा यह तीन नेत्रों से युक्त है। यह स्मितमुखी है तथा अपने चार हाथों में वर, अंकुश, पाश और अभय धारण किये हुए है।

5. छिन्नमस्ता– छिन्नमस्ता उग्र एवं सघः फलदात्री महाविद्या है इनकी आराधना से हठयोग की सिद्धि प्राप्त होती है। इनका मणिपुर चक्र में ध्यान किया जाता है। इनका प्रचार चीन में अधिक है। साधनमाला ग्रन्थ में छिन्नमस्ता भगवती का बहुत सा विषय वर्णित है।

6. भैरवी– देवी भैरवी तन्त्रयोग में अनेक नामो से विख्यात है। इनके नाम भेद रूप में भी ग्रहण किये जा सकते हैं। सिद्ध भैरवी, त्रिपुरभैरवी, चैतन्यभैरवी, भुवनेश्वरी, कमलेशो भैरवी, संपदप्रदाभैरवी, कौलेशी भैरवी, कामेश्वरी भैरवी, षटकूटा भैरवी, नित्य भैरवी, रूद्र भैरवी इत्यादि इनके नाम रूप में भी गृहीत हो सकते हैं। भैरवी महाविद्या ज्ञानरूप एवं शब्द ज्ञान की अधिष्ठात्री है। इनके शरीर की कान्ति उदयकाल के हजारों सूर्य किरणों के समान है, वह लाल रंग के रेशमी वस्त्र धारण किये हुए है।

7. धूमावती– धूमावती भयानक रूपवाली है, यह साधकों के कष्ट को अतिशीघ्र हरने तथा शत्रु समूह को क्षणभर में विरत एवं विरोधी शक्ति का शीघ्र दमन करने वाली है। इनका अन्तर रूप करूणपूर्ण है किन्तु बाह्य रूप बहुत ही विकट है। यह विधवा रूप में तथा वृद्धा है। इनका वर्ण विवर्ण हो गया है तथा यह मलिन वस्त्र धारण किये हुए है। केश खुले हुए तथा रूक्ष है। इनके रथ पर काक की ध्वजा तथा पयोधर नीचे की ओर शिथिल होकर लटके हुए है। इन्होंने हाथ में शूर्प धारण कर रखी है, इनकी नाक बड़ी व फैली हुई तथा कटिल नेत्रों से देखती है। यह भूख और प्यास से पीड़ित, भय और कलह से युक्त है।

भगवती धूमावती के मन्दिर हमारे देश मे बहुत कम देखने को मिलते हैं। चीन के आकमण के समय मे सिद्ध शक्ति पीठ पीताम्बरा पीठ दतिया म.प्र. के संस्थापक पूज्य पाद अनन्त श्री स्वामी

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जी महाराज द्वारा अपने संरक्षण में हुए राष्ट्र रक्षानुष्ठान के समय भगवती धूमावती का आवाहन किया गया था।

8. बगलामुखी– राजयोग की बगला महाविद्या स्तम्मन के लिये सबसे पसिद्ध महाविद्या है इनकी उपासना से शत्रुस्तम्मन के अतिरिक्त संसारिक ऐश्वर्य की अभिवृद्धि एवं परम ज्ञान की प्राप्ति होती हैं। बगला वलगा शब्द से उत्पन्न होकर बनी है। जिस प्रकार वलगा का काम रोक देना एवं स्तम्भित कर देना होता है, उसी पकार इनका कार्य भी स्तम्भन की दृष्टी से अमोघ है। यह केवल वाह्य शत्रुओं का ही स्तम्भन नहीं करती बल्की आन्तरिक रिपु– काम, कोध और अहंता आदि का भी स्तम्भन करती है। इनकी उपासना शीघ्र फलदायिनी है। पौराणिक उपाख्यान के अनुसार हरिद्रा सरोवर से उत्पन्न हुई इन्हें पीतवर्ण पसन्द है इसलिए इनके अर्चन में पीतसामग्री का अधिक उपयोग होता है। इनके ध्यान का मन्त्र है–

मध्ये सुधाब्धि मणिमण्डप रत्नवेद्यां, सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषितां देवीं नमामि घृत मुदगर वैरिजिव्हाम् ।
जिव्हाग्रामादय करेण देवीं वमेंनशत्रुपरिपिण्यन्तिम्।
गदाभिधातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्याम् द्विभुजां नमामि।।

इनकी नाड़ी शंखिनी है। इनका बीज ह्लीं इसलिये है कि इन दो (ह–ल) वर्णो में 36 तत्व अन्तर्भूत है। इनकी साधना से अद्वैतावास्था प्राप्त होती है। प्रसिद्ध सिद्ध शक्ति पीठ श्री पीताम्बरा पीठ दतिया, म.प्र. के संस्थापक राष्ट्रगुरू मुखी पीताम्बरामाता की स्थापना की, तभी से आश्रम पीताम्बरा पीठ के नाम से प्रसिद्ध हुआ– निरन्तर पूजा, अर्चना होने पर भगवती पीताम्बरा माता का यहां साक्षात् अनुभव किया जाता है तथा यह साधको का शीघ्र कल्याण करती है। आज भी पीठ के मंत्री के कुशल निर्देशन में माँ भगवती की पूजा अर्चना विधिविधान से सम्पन्न हो रही है। माँ भगवती साक्षात विराजमान ह और साधक इन्हीं से लाभन्वित हो रहे है।

9. मातंगी– मातंगी वशीकरण में अमोघ मानी जाती है। संगीत से इनका गहरा सम्बन्ध है। इनके उपासक को वशीकरण व संगीत सहज प्राप्त होता है। वाणी पर भी इनका अधिकार है। चतुःशठि कला की भी इनसे प्राप्ति होती है, ज्ञान क्षेत्र में अधिष्ठान होने के कारण यह मुक्ति दायिनी तथा उच्छिष्ट चाण्डालिनी इनका नाम है। यह रत्न के सिंहासन पर बठकर पढ़ते हुए तोते का मुधुर शब्द सुन रही है। इनके शरीर का वर्ण श्याम है।

10. कमला– महाविद्याओं में कमला दशमी महाविद्या है। यह महालक्ष्मी स्वरूपा एवं सांसारिक ऐश्वर्य व आध्यात्मिक ऐश्वर्य में इनकी गति समान स्तर पर है।

Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निष्कर्श – इस प्रकार सम्पूर्ण संसार दस महाविद्याएँ गूढतम रहस्यों में व्याप्त है। इसमें बगला मुखी साधना का परिदृश्य स्तम्भन शक्ति रूप मे विद्यमान है। इस प्रकार नाम रूप से व्यक्त एवं अव्यक्त सभी पदार्थों की स्थिति का आधार स्तम्भन शक्ति है। इसी अभिप्राय में कहा है कि वेद एवं वेदान्त शास्त्र में इसे ही ब्रह्म तत्व कहा गया है– 'येन द्योरूग्रापृथिवी च द्रढा येन स्वः स्तंभितंयेन नाकः।।'

अर्थात् उस परम तत्व स्तम्मन शक्ति से ही द्योलोक वृष्टि प्रदान कर, उसी से पृथ्वी दृढ़ होकर सभी पदार्थो को धारण कर रहीं उसी से आदित्य मण्डल स्तम्भित है। उसी से स्वर्ग लोक भी ठहरा हुआ है। इस मन्त्र में स्तम्भन शक्ति का स्वरूप एवं उपयोग बताया गया है। प्रत्येक पदार्थ जो इस चराचर जगत में विद्यमान है। उसका आधार घर्षण शक्ति है, जिसकी साधना प्रक्रिया को पूरे विधि विधान के साथ करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचो –

1. *आचार्य श्री सरयू प्रसाद द्विवेदी, आगम रहस्यम् (उत्तरार्द्ध), राज.प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1969*
2. *परिव्राजकाचार्य श्री स्वामी परमहंस, श्री पीताम्बरापीठाधीश्वरा, राष्ट्रगुरू श्री स्वामीजी महाराज, बगलामुखी रहस्यम्, पीताम्बरापीठ दतिया, म.प्र.*
3. *अवस्थी डॉ. शिवशंकर, मन्त्र और मातकाओं का रहस्य, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी, 1986*
4. *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज, तान्त्रिक साधना और सिद्धान्त, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, 1979*
5. *पाण्डेय अनु, शास्त्री पं. श्रीरामनारायण दत्त जी 'राम', दुर्गा सप्तसती, गीताप्रेस गोरखपुर, 1953*
6. *राष्ट्रगुरू श्री स्वामीजी महाराज, पंचोपनिषद्, पीताम्बरापीठ दतिया, म.प्र.*
7. *श्री बी. भट्टाचार्य, शक्ति संगम तंत्र (सुंदरीखंड), ओरियन्टल इन्स्टीटयूट्, बड़ौदा, 1941*
8. *राष्ट्रगुरू श्री स्वामीजी महाराज, सप्तविंशति रहस्य, पीताम्बरापीठ दतिया, म.प्र.*
9. *आचार्य पं. श्रीराम शर्मा, सावित्री कुण्डलिनी एवं तन्त्र, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 1995*